नि स्वकृषिस्वर्गसंक्रमः४॥ ॥गुक्षपात्रविक्रोसस्य दकुलकयाय॥अधिकहुल सपात्रयामृदसक्षाक्षयाय॥
नस्यादिवृक्षादिहुलउपजनवपुमकन समनसूपदार्थबीजानापनयाडान स्वर्गेमाक्रसम्पत्तिङ्कुलीरव॥ ॥मा
नलेस्त्रागुलीकृदद पृष्किकदथामाग्रिकें॥वत्सेघादथमास्वानेआओचतुर्दकात्मेकें॥मानक्षयायस आन्नेगुलल
कृद अग्निकृद१८ पृष्किकर्म्मसञ्चिनेगुलिलकृद अग्निकृद४॥वधकर्म्मसञ्जिमननेगुललकृद अग्निकृद४॥आ
किकर्म्मस जिमप्पनेगुललकृद अग्निकृद४ध्वनलकृद॥ ॥पृथ्वादिकुलवृक्षोदुधाडआगीलमानकें॥हस्त
स्वगेमहीषादि वृक्षाविक्षादआगुली॥पृथ्वादिकुलयाधनपयकयाने जिमप्पनेगुललकृद अग्निकृद४॥कि
मि डाड माममवाधनपयकयाननें जिमप्पानेगुललकृदअग्निकृद४॥ ॥दतेमननयनागमदिआनय
थेविक्षघुगुली॥धनधमनाधसम्पत्ति वृक्षोवाविक्षघुगुली॥दक्षायामनन गागियाआक्रियायनीयप्पने
गुललकृद वाआदिने भस्ससहेकुसर्वेद्र्यादि धनागुनाघवाधनपयकयान नीयनप्पेगुललकृदअग्नि
ल॥ ॥तिङ्ग्विधीनागैनाकृक्षावजुर्विंशतिमात्रकें॥सक्षफकुदसदिस विलवाहलकृष्या॥ ॥महाक्षीन
तिहानु गपसाधनयाहकुललायपाननेनीयप्पानेगुलिलकृदअग्निकृद४॥थनेसिक्रपदअग्निकृद४वि
धि॥पुनविलनयाहस्क हस्कप्रमाधकृत्यारवकृना॥ ॥कृद४स्याद्वेत्रिसागम्बारवानमिस्रजिनाकुमेथ॥आद्वका
यादिकाननी सर्वस्याहहलागिका॥ ॥अग्निकृद४यावावाम्वतनक्षदड वाम्वतनथेघास्वमनवरव स्वपासकि

वाकथ्ङ्कगव · साधासक्कि आर्थथ्पाङ सग्सऊनी · सन्नायामनध्या वालागप्रमास्ङ्गना ॥ ॥ षडार्द्ध मानप
र्यके त्रिशगनवकछिके ॥ नङ्गर्त सर्वविम्बानि · कछिकामानयाङ्गिनं ॥ ॥ इगतयावङ्किवा · श्रीसेऊन
ग · वानसावाल्यारवङ्गना ॥ इगलमवानपद्मयाकछिका · कछिकाधायापनमृनि ॥ क्किवानपद्मपत्रवालाग
ङ्गना ॥ ॥ चतुनसनलसात क्कसगनयक्कधासन · सर्वकर्म्माक्कि हानाम्नि · सुक्कनडवमानन्ते ॥ ॥ चतुन
सुभयपकचक ॥ नसाकान · पद्माकानवान · अग्निकुण्ड · मध्यम · कुधासनअग्निदवनासमस्तकर्म्मङ्गलसनी
मक्रमृक्कि नङ्गनमाङ्कनङ्गना · त्रिस्र्कमपानहानाकृतियागनलागमाङ्गना ॥ ॥ पद्मन्देवीगर्ह आमेपीना
नृपकाक्किकान्न · त्रिदक्षिकक्षिकवामदक्षिणक्कवचनी ॥ ॥ पद्मासनसत्वकानवीआक्कचडङ्कनपू · कुपू
वर्णनजनगसूर्यगज कमलवर्णथि स्वक्रमालालिथ्जव · कुधानविथ्खव · वनदमुद्रा · कुथ्जव ·
खेडालिथ्ठिदक्षीहड · थथि स्वनग्निदवनासमृक्षिङ्गले ॥ ॥ नत्रत्रयंजटाजूट · शिनक्कि महिनाङ्गिनी
सूर्यनडासनासीनं · वज्रसत्वार्क मौलिनं ॥ स्वग्वङ्गमिखा · जटाजूटामृक्कटालीकानमृकुटमनानामर्हिचला
लीकानननहधनपू · सर्यासननसूर्यमण्डलसविद्याकर्त्वं वज्रसत्वमिनमधनलपविद्याकर्त्वं · थ्मनगुध्व
ङ्केनाङ्गले ॥ ॥ यज्ञोपवीटषड्या · दिव्यवस्त्रसमुच्चले · सौम्यरूप[illegible]नानन्द सर्वकर्म्मार्थसिद्धिदे ॥ ॥ मानानी
कावासीविद्याक · सङ्कहम · नानालीकानथ्गिस्पीविद्याक · दिव्यवस्त्रधाय · मृगचर्म्माधि ॥ पटपाटस्वनवं

स्तुनी मिस्यविश्राक ॥ महाकरुणवन्त निकरुनन सन्दनरूप · साधुश्रामलरूप · ज्ञानसमस्तवो · आनन्दरूप समसा
धनार्थसिद्धि · सकलविव ॥ थ्वथे थ्व अग्निदेवतासमृद्धि हल ॥ ॥ नमस्ते सर्वदेवानी मण्डली पञ्चमार्हनी ॥ न
मनाथसदण्ड · प्रसन्नज्वालाहस्ते कथय ७ ॥ अग्निदेवताहृदयासमस्त सर्वसदेवतायामण्डलसगर्भ महाहु · मग
ढकवहनपयकं विश्राकत्रिनात · अमृतननसहायकं विश्राकत्वे ॥ थथिंग थ्व अग्निदेवताअमृतध्यानस्वरूपत्वे
थ्व हल ॥ ॥ मन्त्रमुद्रासंयुक्तं वज्राङ्कुश आदियागनथ ॥ त्रिनत्वनकिं नाकायहान वङ्कि समाकव ७ ॥ म
न्त्रमुद्रासमायुक्त्वक्षय · मन्त्रशैलीहानवखोमुद्रा स्वना संकनन सय ॥ वज्राङ्कुश आदियागनाक्षय · अङ्कु
शबन्धककडाव · देवतानि मन्त्रन · आवाहनयानाहतुनख · त्रिनत्वनकिं नाकायक्षय · टक्किनाहूंज ३ ॥ त
किंनाजमुद्रा · वज्रथगिडाव · नकिं नागकाधनाजनं निर्विघ्नयाड · वज्रकायान · कवचनया हृसा नास · आ
तनेसगोननायाडानहानाग्निदेवता · आराधना आधिनयाड · सानपाख · हल ॥ ॥ स्पर्शध्वस्वस्तकं ॥२८॥
कनीहृनयह्मगसंतवे · नवीनपल्लवीदर्भीकुश मध्यसंस्कृता ॥ कुनमथ्वनकथाय क्वाकाष्टामाथ्य
पूर्ति नथ ॥ सं नागन्य नागादियहमक्षनयानल ॥ ॥ स्व अध · डलति · अध्यक्ष वलंगनसिं ॥ कं कचीपना
सर्वी · हृतकृपतिं · यहोग · इमीन ॥ थ्व तपवस्त पल्लवमाल ॥ इइपाकसिं · चाकुसि · देवदानथसि ॥ थ्वनमा
नमिडाने गंडाव · पूजायाय ॥ थन सिमनगुकाकायाव · कुमाविकान अंडाव पूजायाड गंजा ॥ ० ॥ थ्व

ममहाकृष्णादिव्यापविनात्रह्मदेवता· बुद्धधर्म्मसंघननो॥ पृथिविजातादनागर्ण्ष सर्वविघ्नशान्तिकु
र्वन्तु स्वाहा॥ ॥ॐकारपनमाकृनमूर्त्तिः अग्निदेवतायागनं· थमहाकृष्णादिव्यदेवतापविनत्रह्म
ज्ञानस्वरूप॥देवता·ॐकारसृसैवदा· अकोन· ऋगवेद उकारजुर्वेद॥मकारसामवेद॥बुद्धध
र्म्मसंघनना· कृताकमा· अनादिवज्रसत्व· पञ्चमहास्वरूप· कचास्वहन· बुद्धधर्म्मसंघसय· बुद्धधर्म्मन
कचा· मामवबुनकचा· पृथिविनछाठेचारवव॥ गर्हीमायथ्वनहम· नीकचायाश्रम नस· इचूनजा
व· संघस्वरूपवं· माचासय· छललपेंउ छलपेविष्काक· थकृष्णासन· ज्ञासन· मन्त्रस्वरूपे· थनाथं
अग्निकृष्णगर्हेस· मिपनेत्र· नेवक्षथलयकें मिपनन· थवनत्रिकोणधर्म्मोदयोगन्ये· थमिपं· ब्रह्म
पानेमिनादविस्मय· मिमिनगूका· कृष्णलसयकोनयिगमसहस्रनानिसय· थनादिबुद्धसय· मन
संघस्वरूपसयंइंगा॥ · ॥थकृष्णासनथपनायाडानसमस्कविघ्ननिवारणशान्तिस्वरूपयाक
इंगा· स्वाहा स्थिननिश्चयरव॥ ॥अग्निदेवतासन्नयाडान· उकनपंज्ञावविश्वरूपनहि
प्राय· दशदिगगुवन· नाकपवपापनदड· शान्तिरूप· ज्ञानस्कन्धमूर्त्तिइनं॥ ॥पादानंस्थि
नं विघानपादाहुं विगनरवंग॥ सनंगगदछाउ· आनंदछोनथानं॥ महानंनइरूसीय
कंदछानसानं॥ कोटिदछाकुसफमंपनिमिर्हिमं॥ हनल्यकंनाहिदछाउ· सुवलाकादलीन

था॥ स्वर्लोको हृन्मध्यस्थ महर्लोकैस्तु वक्ष्मि॥ जनलोकैश्च दग्धा· तपलोकैर्ललाटके॥ सत्यलोकैर्मू
र्ध्नि श्री भुवनानि चतुर्दशेश॥ ० ॥ पातालतले· तलभुवनक्षय· पातालिय भुवन· वितलभुवनक्षय
लोके सुतलभुवनक्षय॥ पातालतलभुवनक्षय॥ रसातलमहातलभुवनक्षय॥ गर्भे नशानल
भुवनेक्षाय

पैजव समस्तयानं स्वस्तिकल्याणमङ्गल ॥ सर्व प्रयात्रावनावड समस्तयानं स्वस्ति कल्याणमङ्गल ॥ ० ॥
स्वस्ति जात्री स्वस्ति दिवा स्वस्ति मध्यंदिने स्थिते ॥ स्वस्ति सर्व मध्ये नात्रौ सर्वे बुद्धा दिशन्तु वे ॥ स्वस्ति कल्या
णमङ्गल ॥ नागेनादिनेस्लो मध्यकालस्लो स्वस्तिकेल्याणमङ्गल ॥ प्रातमध्यमस्तथ ॥ विघातस्लो धायम
ध्यातस्लो कल्याणमङ्गल ॥ अप नाक्रस्लो मध्यानेस्लो संध्यास्लो पुहनाहस्लो क्रह्वनात्रिस्ली ध्वगंनस्ह
पहनमय ॥ थोपहनवलोस स्वस्तिकल्याणमङ्गल ॥ ब्रह्मलकयाडाभृइधने अनुतावनोयाडान सर्व
त्र स्वस्तिवाहानु माचेषापापमोगमन ॥ सर्वसत्वा सर्वप्राणा सर्वेत गोष्य कवलो ॥ गनन्तु मङ्गल स्व
स्तिकल्याणमङ्गल ॥ थ्व समस्तपाप निदनपं माकमङ्गल ॥ सवोथे समस्तयानं सुकल्याणमङ्गल ॥
समस्तप्राणियानं वोना मिलक्ष्ज जीवाङनु समस्तगानिधान अगानिङान ॥ केवलस्वासमात्रवह
लपूयो समस्तयानं केवलधाय ॥ जीवमाङ्गक्षेत्रेह्ला ह्नैमङ समस्तस्वस्तिमङ्गल ॥ ॥ सर्वव

सुखिनसकुं सर्वसकुंनि नामया ॥ सर्वसद्वाहिपकेसकुं माकस्थिस्याप मागामजु ॥ सर्वविधायस मस्कनागास्
थिथङ्गल ॥ नाशाया सुमर्कनिस्के कुथङ्गन ॥ नाद्ध समस्कयानी थ्याथयया नासुथीव थङ्गन ॥ सुखिनाम
मस्कयापापक्षादिपं निखङ्गुनपैवङ्थङ्गन ॥ ॥ सर्वदिवसकस्याक्षा सर्वनक्षगुरु इका ॥ सर्वे ॥ कार्ह क
मुद्दी सर्वकर्मनिनाश्वया ॥ ज्ञननसष्पवबनन सखिरुवसमनकाश ॥ ॥ समकादिनदिवसया सखिथ
न ॥ समस्कनक्षुवला ॥ समस्कजासन आदवलाया सखिथङ्गल ॥ महाकुंढिवके ज्ञाकाजसम स्कयाथ
ङ्गल ॥ समस्क गृहवक्षनि आध्य सकाद्वहय संकटमा हिंडुदकानी ऋणि सजि समस्कैयाकेस्या इथङ्
ल ॥ वृद्धया पुत्रया अनुरावयाकन सखिथङ्गन ॥ ॥ ॐ नक्षहिमहालक्ष्मदवर्ष छिउस रूम ॥ एकी
नोङ्गतिमहा ज्वलितसद्धि हिमालवसाहा ॥ ॐकारमूर्ति अग्निदेवता स्वरूप ॥ ॐकार सप्त महाल्म
हिलम वस्ववस्थित ॥ नस्याधिदैवि स्पयच कन्मक्रुप नमस्वन ॥ ॐकारयागुरुआ ह्रावनाहृदयस
वसत पीवि थाक ॥ थ्व समस्के नमन्त्र न्यासयाडायाकन कलल पुरमूर्ति स्वरूप ॥ थ्व सँप नमस्वनथ
य ॥ ॥ स्नानशाति मथे यह सेगाय समिधस्रुत ॥ मन्त्र यह्न यह्न ह्रानामिशातिरूपकै ॥ यहक्षि
याफल ज्ञानशातिआगासँन यह समिध नानाहोम विडव्याङ्गनं ॥ सन्का पङ्गनं मन्त्रयानय ह्रनं ॥
मक्ष मूर्ति शान्ति स्वरूपकै ॥ ॥ इह्वंदहतिपापानि दीर्घमाक्ष प्रदायकं ॥ आयायनाङ्गुणावापि

॥ ३० ॥

त्रि विश्वाश्व नक्षत्रतु॥ ॥ॐकारनयाङस्व मात्रनं पापरवंध्य नपं भाचक्ष दीर्घमा नमाङ्गविंदं
सूण मात्रनं निश्च नाकिश्च यख॥ स्वकविधि प्रकारन थ ॐकारनश्वावलपाया कुलजुनी॥ ॥गस्वदेप
नमेध्या नं गनध्या नं ब्रम्हदवता नाहि मध्यस्थि नं पर्श इन्द्राद्या दि ठिादव जाय॥ थ्व थिस्व ॐकार
मूर्त्तिध्यान पद्पन म्हुम ख नपवं नाहि मध्यस वहनपं वास्व पमासनयाङ विक्षाक इन्द्रादि
लोकपाल मडायकं विक्षाकं वेजुआ॥ ॥पद्मचन्द्रार्क मध्यस्थं वीज ॐकार संरुवं नादविन्दु क
लाभीनं यकेव द सवदवि ७॥ पद्मयाद थ्व स चन्द्र मण्डल सूर्य मण्डल याद थ्व सवीजाक्षर ॐकार
मन्त्र स्वदनं यमात्र कार नादविन्दु के चा नीन चतुर्थं दार्थ जोध्य यथ्व जनजुना॥ थ्वन संइक याम नीम
कादीन॥ ॐ व म्हहि थ्वथिस्व महाहृदमहाहृनक स्वं दथ्वस प्रत्यक्ष दवता महा शुद्धि नयाजाय महा
मोन्य भूपती सहम स्वस्वगा गङ॥ गृहीत्वा हृति जोहृति प्रत्यक्ष नलागनया महाजठमीसस्क दह
महाथ्वलं गम्भीर नचपं॥ तस्मिंहिजोलव स्वाहा॥ थ्वहस्पमस स्थिनयाङ वहनपं विक्षाक हनस्वा
हानिश्चयख॥ ॥ज्ञानाग्नि सन्निभ ॐ नस्य ज्ञानाग्नि ल्हाप चेयाय जुना॥ ॥ॐ व्हा ३ विघ्नान्तक नल
पापविध्नि समानाय नश्चिन्तुः त्रुः ठं ६ ॥ॐकारप नमाक नमूर्त्ति सहित नन्हा ३ कारवाविजाक्षरनं
र ह्नासक सहित नविघ्नान्तकस सफलपापविधसत हस्मयाङन॥ हरुंकारनकी नकमन्त्रस॥

पञ्चसर्षपा — नमस्तु ॥ यूका पका हाम्ल तापुहाम्ल क्षाउ हाम्ल मायक मस्तु ॥ ॥ॐ ह्रां ४ विघ्ना
न्तकृत सर्वक्षुअग्निकृत हूं हूं ॥ नागदुव माहुमाने चतुर्कुंठामल प्रणामन नमस्तु पायमा चक्र
मस्तु ४ ॥ उदकादकं नस्य ॥ जीरवादक पूवाम्हि कनयाय ॥ वनमाणि — मणि ॥ ॥ॐ ह्रां ४ विघ्नान्तकृत तन्तवी
बलमल नपन यक्रं ॥ ॐ — सेनावादकं नस्य ॥ समस्त सुकार्थ लग्नसवस्त्र मल प्रधनयाय याग न — ये
कुंकुम स्वानक प्रधनयाय याङ्गुना ॥ ॥ॐ आं विघ्नान्तकृत सर्व पुष्पहान संकल्पिक यक्रं स्वाहा ॥ हका
दकं नस्य ॥ सर्व पुष्पहान सीकान डरफ गुलवन्नाइक ठापये याय ॥ कानिलको दकं नस्य ॥ जोलमेत न
य ॥ ॥ॐ सर्वकथाग नेका यविकोधन हूं स्वाहा ॥ पञ्चसुगन्धस्नान ॥ ॥ॐ केतर स्वाहा ॥ नक ब्वाव
या ॥ ॥ॐ हेचर सील नर षडिन्द्रिय विशोधन हूं हूं फट् ॥ ल्हो नालि क्वायस्ते ॥ ॐ कान सहितन ह
नर सील नम्य यह में संक्षेवि घ्नविनायकयाद पेछेन हेकान प्रमाणक कामलडाय साधनपाद वकाया पञ्च ॥२१॥
षडिन्द्रिय नादिनं उपहाग्लि याङन महामंगल हे नेगुहं ॥ ॥ मस्तुश्री लोकनाथ आदि जिनवन नमस्तुया
जम्बनावज सत्वा मैत्र्या वज्रपाणि सर्व नेयेक गोवारु नारुडपाला हृद्या वेनाव नाय त्रिरत्न नमामि
हैं श्रीदनं ४ प्रयोदाय ॥ तुहरा सर्वार्थ सिद्धि विमलस्तन सा मंगल बाधि मल ॥ मस्तु श्री लोकनाथ जिन
कुलस्मस्त्या गु रु वज्रसत्व मैत्रय वज्रपाणि महासत्वकाय उदकायाक हुडपाल वेनाव नादिपञ्च

मुहूद्दे त्रैलोक्यनीनमस्कानयाङ्कया ॥ नि ज्ञेरवयाङ्कंयाव-ह्नदाङ्क सैतुसूयाई विक्षाव-सर्वार्थसि
द्धिमय गथा गगविमलधाय-निर्म्मलनिस्कलीकयाइ-सुमनसा आय-मनहर्षयाइनेमंगल सूनेव
मिसलस-थ्वनवाधिसलयाव ------ हृस्वाहृकानवइ पस्पतिदमकोवइ यक्ष्मस्त्रहस्ल-पी
न्हाथाहवैंशाखिपुगेश्च मथनानर्ह्वि नाजामह स्था-क्षांगपनलकुडुप्रतिदिनमवनाग-चहस्ती
यमाली ॥ गुहासर्वार्थसिद्धिविमलसुमनसामं गलेवाधिसलतु ॥ हस्पृस्तागेनहा ----- कृवान
वइलक्षाधकुलवद्धन-पस्पतिदमको-पृथिविनमहन्त-अवइ ------ नदस्ती-नहमामूर्ति
नव-महाबुद्धथि स्व-इगेलुयेकनविग्रहस्वप-दर्भ-वाथिविस्नानन प्रुलाकयाव - वजपहस्त
हस्ता-वइपहस्तहितनी देविन्नालिंगनयाइविक्षाव-पिन्नाहाताइनपूजा-पिण्डादि आगमिन
सेयाव -- गन्धमथना-थ्विंस्वनाममन्त्रिणाक मथनपु-नर्ह्वि नागनाम महाक्षांगनाङ-मह
स्ता ॥ महाधीन-क्षांगपनलकुडु ---- लधयाजुन्यवीकनखवाअरिन्न-कृयनिवज्रनस्व
प-थ्विंस्वक्षांगवृद्ध स्ताने कनल ------ थ्विंस्वबद्ध स्वपन-प्रतिदिनमवलाधय
दिनपर्हि नागगृहदूर्जिनलपु-गन्धहस्तीयमाली-गन्धया ------ मईनयाक-थ्विंस्वक्षां
गाधादिवाधिसल-यमानिनोम-यमयाङ्क ---- उहमान-हली-विमल --------- नि

मीलमति मंगल याड वोधिपद महाध्याथकुन ॥ ० ॥ सं घस्के लोकव स्पृगृहस्यगाश निलश वोधिवि हु सुविष्ट
वृद्धप्रामाण्य सिद्धि विहितकलिमलाहनुकानीलदण्ड · बुद्ध आलक्ष्य वाक्यविजितक्लिन गृहस्य सर्व सत्वा नृक्षा
म्हुसुस सर्वार्थ सिद्धि विमल सुमन नाम गणीन्द्र वाधिमल्ल ॥ ३ ॥ त्रैलोक्य संघयाव स्पृहिकार्थि गृहस्यनिलय
या६ वाड ॥ लोकस्य मल्क वोधि चित्त कुश्शानने सुचिक्रूरेनियाक · बुद्ध या प्रामाण्य हर्ष मान सिद्धि लोवक्कृ
कृतिनकृत · केलिभुगया पापमहृले · ध्वक स्फालक्कृलनीलदण्ड नाम बुद्धयाकान · छन्दु नाग जयल
मानजयलोप्य मजिव · जयनप्प ॥ थोथिस्व गृहस्य गृहलोक नमस्म स्कलाकयाका गृहस्य · ध्यवहान याक · थ
थिस्वक स्फाय कृत · नीलदण्ड नाम क्रोध नाम ॥ ध्वस्तु स्वमाहवो ध्वी सर्वार्थ सिद्धियाड सर्व कार्य
सिद्धियाड न ॥ विमल निकलनिवनात · निर्मलमति याङ · मंगलथकुन महावोधि ज्ञान स्कन्ध मंगे
लथकृत ॥ ० ॥ प्रज्ञासुज्ञ अवका आदव नृवहकृति ज्ञान संज्ञा नता ना · मारीचि मानमाना सकल १२
रयहनापीनवर्ण्योग्नि वज्रा · मायुनी मानकीय विजितनि पृगस्य पाद्धला नाव नाश्या · स्कुहा सर्वार्थ
सिद्धि विमल सुमन नाम गणीन्द्र वाधिमल्लु ॥ ४ ॥ प्रज्ञासुज्ञ अर्थका नाश्य प्रज्ञा ज्ञान · ध्यावन पृथुस्य
नाम · स्वार्थीता नानाम · गदनृवहकृति · थनालिहकृतिनाम · ज्ञानसंज्ञा नताना · ज्ञान सत्व यय
क · मारीचि मान माना · मानवी नाम दविन · मानतम स्कमावकृ · पीनवर्ण्य त्रिवज्रा · स्कुवर्ण

षपाकखाल·मापृथीमामकोंच·महामापृथि·मामकी·खिजिग जिपुगश्म·डाकूसमलकूजयनपु·पाड़
नालाचनाया·पाद्धला·नाचना·थ्वगंदूवीगस समस्कू यो दुखमानहूवथ्वं॥सर्वकार्य्यसिद्धियाङ विम
लक्षमनसा·निश्चयन·निर्म्मलमतियाङ मंगलथहल॥वाधिसत्वयाहूवथ्वं मंगलथहल॥ ॥
गोभनीषोपृनीवगुजगलक नावेडूपाओंहूंरआमय·वानाही वड़हकोंअसिपनसध नाधर्म्मधातेश्वनीच
कपृथीहानजूला थ्वगू निहिगकनाथहूजासर्वनीच॥ दुखसर्वार्थसिद्धि विमलहमनसा मंगलवाधि
सत्त्व॥ ० ॥सधिमनीअयकवचनङनहिक·श्रीसत्वनकनाहिं।निशास्त्र गानाहाकचशास्त्रदक्क कड·दुजग
हनकनाधमयहवा॥खड्गपाओं हूंरआ ग्रमय·खेड्गाल·श्रीकूशकड·पाअकडशनाहिवडहकला
मय·वडवानाहिदवीनवडकडावमानययाग·समस्तमानगासयाग·असिपनहधना·खड्गपन
शुकड धर्म्मधातेश्वनीच·धर्म्मधातेश्वनीनामद्वि·हानभूलशास्त्रकड·थ्वगू यकभूनानामदवी
नाहाजिन थ्वगूकड·शुक्लानालाज॥सर्पनी·वडनी·थ्वसमस्तनंजयहूगृपि नाक॥थ्वगू सत्वहूमा
नहूवथ्वं·सर्वकार्य्यसिद्धियाङ·निकगनिश्चनगयाङ·निर्म्मलमतिमगंलथहन·वाधिसत्वसमस्त
यामंगलहूवथ्वंमंगलथहन॥ ० ॥वीहममालाहगीमाप्रथिनजिनवनसावनीधूपवज्रा·वगानी
गन्धवज्रापुष्पसिनवदनाभागनिजार्थ्यनाना॥लक्ष्मिवृहस्यवाधि·सकलहयहनासामनथोदीपवज्रा

सुखाः सर्वार्थसिद्धिविमलसमनसां मंगलैर्वाधिसन्तु ॥ ११ ॥ वाहसथाना वचाडवीनादेवी आकतनक्षत्र
माला कठावचाउ ॥ मानादेवि जिनवनषुद्धवागृह उज्ञीर्हे प महालावचाउगीनादेवी ॥ धूपादे
वी धूपदहकड दहवाणा मनसा कछडं वजालीदेवी प्रहसितवदना फलावचाउ हासादेवी सोमा
हगनस्वाप्रष्टे सोगनिवृद्धखी नाम ॥ आचीना वाधी समर्द वृद्धवाधिया प्रहावन सकलनयवखलो
मे माक ॥ श्वलोस्वादि पूजादेवी यास मनकयाशुरूमान कुवर्थी सर्वकार्यसिद्धियाड निर्मलमतियाड
मंगलथइल वाधिमलवसमकयाआनन्दथई आनन्दयाइख ॥ ॰ ॥ वैभाराद्यधर्मचक्रप्रतिमजिन
वनपर्वैट गृहकूट श्रोवशाबावशावाधिमूलक्ष्मिनिर्निहितकनाकार्कैनवाधिरक ॥ श्रीमदावना
लहनगरनमिनेश्वरचक्रेप्रहर्षे उहासर्वार्थसिद्धिविमलसमनसां मंगलैर्वाधिसन्तु ॥ १२ ॥
वैशालिनगरनस धर्मचक्रप्रवृत्तैयकलै ॥ श्रीलोकमुनिवृद्धसर्गे ॥ लोकसमस्तदंगनायाद्रविडा
क ॥ पृष्ठकूट पर्वतस्य ॥ धर्मवृद्धैनेष ॥ आवालिनगरलेधर्मौवइनपा ॥ गथथथा नला ॥ क्षितिजिन १३
लनिहितैधाय वाधिवृक्षाय ॥ श्रीमद्वावनालहिनगरसहितैश्चय ॥ श्रीमज्जम्बूमुनिरन्यान
कस्कहनगरा ॥ हरिविहल हिनपथगर्हैलोककादि सर्वेदवैनमस्त्रैं नमस्कारमाडनया ॥ श्वि
स्वइष्टडमलान ॥ वैश्र४ स ॥ केलामस ॥ महामसुखपसदेवलोकनेपवित्रन्दसलायाउ ॥ श्वस्तु

सवेवंशालि॥ गृहकूट॥ श्रावकिस॥ मनुष्यधर्म्मोद्यता याकर्त्री॥ हाउगर्थि स्वपना॥ इन्मीन॥ जन्म्या॥ ऽ
ली॥ वलगंजसि॥ अनपेव वल्कल लगे याद्रुमवृक्ष॥ इइवहनपन॥ कलशा सहथने याम्य॥ अव
क पृथिवीतलस्वथानवाडवहनघष्य॥ मसानफमात्र॥ सहस्रोग्नु॥ महाकाक दालकियगाकि
नहाकिन॥ अथनसूर्यो॥ नकरवववलसह मिनथवानथ्यं ववलस जगिकामलकिनहा॥ म
सनुमर्यी मलावथ्यथ्य॥ कार्केनभय॥ श्रीमद्वावगानवृद्धयाधर्म्मोदद्यतना॥ धर्म्मश्री सं धर्म्मचक्र
धनेले विश्वाकर्त्री॥ असवृद्ध सें देवलोकलमस्त्यी गुरुमानेरुवथ्यं॥ सर्वकार्यसिद्धियाउ॥ निर्म्मलम
तियाउ मंगलथइला॥ समस्तवाधिसत्वयानी॥ आनन्द हर्षमानेरुवथ्यं खं॥ ० ॥ कुंग्रे इर्वावपम
अज मपिनिहितेषा वनामन्सगुम्मे॥ वोचाही पुर्लकुम्भेमे निवनवचने वड्घण्टानिनादे॥ वृद्धानी
प्रातिहार्य्यसजेननमिते हास्यलास्यविलास्य॥ गुरुसर्वार्थसिद्धि विमलसुमनसा मंगलैवाधिस
त्व॥ ८ ॥ कुंग्र समा नामन अज आवन दा वा नाहिप नमब्बनीसन पुर्लकुम्भादक नवीव
नेपाभूतिथक याविविस्मानइले॥ मुनिव वेन व्यास्यानरुने॥ अवस्वकावन वड्घण्टानिनादे वृ
द्धस्कहाथ ज्ञानवयं देवलोक मनुष्यलोक नमिनमाने नमस्कानयडा वहास्यलास्यविनासनहर्षे
माननेविश्वाक॥ अथिस्वगृहकलशानसेंगुरुमानेरुवथ्यं सर्वकार्यसिद्धियाउ निर्मलमतियाउनं

मंगलथकुल॥ बाधिसत्वसमस्तया नान्दखवर्धंखव॥ ॥ गानिमक्तानिनिर्म्मेछुप्राकृशर्घं पाद्याचमनकृ
कुवासमयैवदर्शयत॥ ॥ॐ अग्नयादिप्यादिप्याविषाविषीमहाश्रियहव्यकव्यवाहनाय इदं अर्घं इदं व
हासमयस्त्वं॥ दक्षिणकनमलयप्रदानाकाचषगर्जनीकुम्भलाकाचषकुक्षयिला मध्यमादिपू
यपर्वधानयने कृत्वा तर्जनीपार्श्वेक्षिप्त कन्यस्ते॥ समयमुद्रा॥ ॥ध्वगमकुलपनप्प स्नानयाय
नाचायक इद्वायक सर्वांगेस तजीनसहाय॥ समयमुद्राकेन॥ ॥ॐ अग्नयादिप्यादिप्याविषावि
षमहाश्रियहव्यकव्यवाहनाय इदं स्नानं इदं वंहासमयस्त्वंभय॥ॐ काञ्चपनेमाकृत मूर्द्धि अग्निदेव
कायानें आइ स्यमानयाइ काछंवव नवगजयाइ श्रीलक्ष्मायमानक हागाहयाकु सर्वविघ्नाकृत अग्नि
देवतायान पूर्ति हावना मध्यविके वृद्धयाइन॥ उत्थाय लावाहन॥ इदं धायलंस घ्याइविघ्नाक॥ तंभ
यकानक्षनक्॥ निलाञ्जनयाय॥ मालङ्केधनयाय हाथय सिंदुरयाय॥ ध्वगमसमयमुद्राहृना॥
दक्षिणकनमलयमुद्रा कानखकृक्षयिला मध्यमहृगीयपर्वधावेयनधाय ऊवलाहाकने मुगत चामु
नचायक घानावाघ्राला वानकुम्भलवानन दध्वला वावा स्पृशनीवावाना॥ नपस्तावर्क पिठुनकेन
स्पयमुद्रा समयमुद्राकनकृसाय॥ ॥ॐ वज्रनकृदं॥ प्राकृतमन्त्रं॥ प्राकृतधायसर्वास नीनसींगी
खलैंखनेहाय॥ॐ अग्नयप्रवनसक्रा जायज्ञधीप्रति कस्वाहा॥ ॥ॐ कानमसहितन अग्निदेव

॥३४॥

मायार्गं ३ऽक्रम आदनसेस्नान याङ अर्घे स्नानविधियाय स्वाहा स्थि नयाङ॥ ॥ॐ नम्नवप्रवनस
का नाथ पार्षं त्रिनि त्रिनि कं स्वाहा॥ आग्निदेवता यार्गं ३ऽक्रम सहस काजयाङनप्रय कृ मय द
हमाननिय॥ प्रदक्षमाननना वानकं या स्वाहा स्थिनयाङ स्व॥ ॥ॐ नम्नवप्रवक्त काना यपा
र्षं त्रिनीक स्वाहा॥ आग्निदेवता यार्गं ३ऽक्रम आदनयाङ पाथसतवायकं प्रदक्षमानन स्वाहा स्थि विक
स्थि नयाङ स्व॥ ॥ॐ वज्रआङ्गमय॥ मैज ठ कुल पं आय॥ ॥ॐ सर्वगन्ध गन्धकाय विशुद्ध
ने स्वाहा॥ सर्वगन्धगन्धकायमन्त्रनं आग्निदेवतायाङ बीनथोनहनं॥ पञ्चगव्यानहयाय॥ पञ्चापवान पृ
थ्वाक्षुथि॥ श्रीं असी वीजनिर्गत वैश्वर्णे महाहलो॥ वैश्वानर नमहे वन्द सर्वसम्पत्तिदायकं॥ त्रिकान पञ्जाय
नपु वीजमय पृथ्वी या वाआसमन्त पापविनाशनपृ॥ विश्ववर्णे महाहलो॥ विश्वरूप॥ स्वर्गमर्त्य पाताल निष्ठ
वनीभूनधृथं आव महाउज्ज्वल वैश्वानरनमहे वन्दश्चय विश्वरूप अनलक्षय मे महे यन वन्दनमस्का
नयाना सर्वसम्पदायकं क्षय समस्तपदार्थ सम्पत्ति विवर्त्त कत्रब्राह्मण सर्वगमत्रष ब्राह्मणक्षय
ठानीनमर्वी से पाघपाद ६ पं गन्ध पाथक्षयतवाय अर्घमूर्द्धि छि नाहया अर्घक्षय स्नान॥ आचम
नवकं कलय ७॥ आचमनक्षयनाचायकं गहं स्नानहना॥ ० ॥ आचार्यस्य सकलपञ्चोपचारतौंग
सकलाधानक्षगृं ली॥ आचार्ययानाहानिनपाला प्यपविडयाथीत कृमिन प्रवास किवान स्रगें

नीत्यावनरुना ॥ पैकाभुक्ति नविषमध्याय ॥ मस्तुमानन विषयवाधिका त्रिंशादगैरुली ३ निंउस समुदायन प्रश्ना
दीर्घप्रमाण ॥ थ्व याथन पञ्जिमानी ध्य काभुक्ति खकिका स्व यख्यागै गुली ७ वाफा ग्रन नम्यन सेथुन ॥ ॥ नत्र
न गैलप्रमाण नन म्ये वङ ॥ दक्षोहिन्न गैलप्रमाण अनलाश ॥ वृयाभुक्ति थवन नलज गैली ७ ॥ नई हे वि
षमजवाधिक वगुन गैलप्रमाणी वङ नस्तुमाथ्य नलवा थवन थ्यगै गुलीव स्य काभुक्ति वा थ्वनननप्यवु
थ्वकरुनी ॥ थ्यावनी पलोथ्वला थ्य लावा काभुक्ति भुक्ति वारुना ॥ ॥ नश्रिगवाल मरवानम थ्वनपु
दलकमलकर्णिकाया सूर्द्धस्थित पञ्चलवीकवई ॥ थ्वयालवामक्षिवानमत ॥ मत नस्या पञ्जिपल
सूत्रिम पञ्चसूत्रिकवई ॥ ॥ सनकगावदिकी प्रमाणगै गुली ढ्ये ॥ ववामनवा नपिं मल नला त
जाम्र्य योङवाङ थ्यवाह ॥ ॥ नर्हहिक प्रमाणलव्या थ्याप मदलाप माश ॥ थनपिवत्र पत्रप ग्रावलौ
नरहैनीगलन त्रिसूत्रिकवई ॥ थ्वयाथवन त्रिसूत्रिकवई ॥ नत्रेवथ्वनकनकनीयस्ति माशै नमप्र
वाद्यश ॥ थ्वबोपात्रयावङ ज्याः वास ज्ञ चतुपिकनी यमीनामसयरुना ॥ नमप्रवाहयश ॥ थ्यल
हास्र्ववनामसयरुना ॥ नस्यादिमखगदङअय थ्वनकवयानामरुनो ॥ मववृङद्विनी गलीप्र
माणश ॥ वृयाम्येस्थ नयि स्वलेगलप्रमाण ॥ ॥ कुलिपात्री ॥ थ्वनथ्ववापाश्रीयालकमरुनो
॥ ॥ पाञ्जानूपनादङवङ नलोमोनक्षिकाह्य गलविकावास्र्य ॥ थ्वु वापाश्रीयावनवृपव वङयाभु

।३९।

हायकङ्गा ॥ चतुवायावाकस नतयाथवन्नवज्रस्त्रैकनग्गा ॥ चतुवापतियावाकन्न श्री गलह प्रमाशह
गा ॥ पप्रमत्र — ६ श्रीलह प्रतिमारवातिकापवमाम्रवडीकिनमध्येछवा ॥ पलीयापग्रथिंरवचेतुवायावा
नदथूम्मलवनक ॥ ममवज्रविक्रहगा ॥ — नचवपाग्राछवाहनलगाग्रादिडव्याम्मा ॥ ४ छवापाग्रीदयक लै
नदयकगवतिगलनदयकगव ॥ कतिपात्रीछवालक्षणहगा ॥ ० ॥ नगालत्मिनमूख नेकान्नशय
वदलप्रमाशीशुक्रवज्रविगाथा ॥ गावक्रनेसनेकनवीगाकनथगायनपू ॥ अग्निदवेनाक्षु उ पवडायावा
वयापायथडलानथाहगा ॥ शुक्रवज्रविलायक्षय ॥ वज्रनलयाक्रलनदवगाहवन छवाचतुवानयलह
यहलै ॥ ॐ क्रम्नयस्वाहा ॥ ॐ कावलाहितनअग्निदवगाहलैयानसैतागना स्वाहानिश्चयरव ॥ ॥ ॐ अकी
यस्वाहा ॥ अलोकपानमि ॥ ॐ कावपनमाकनमूर्ध्नि अग्निदवनाहृयौस्वरूपपानहगा ॥ अलोकपानमि
या ॥ ० ॥ ॐ वज्रमामायस्वाहा ॥ पलासमि ॥ ॐ कावमूर्द्ध अग्निदवगावन्द्रमास्वरूपयानं ॥ पलासीहया
मन्त्र ॥ ० ॥ ॐ वज्रश्रीमलायस्वाहा ॥ खदिनमि ॥ श्रीमनस्वरूपअग्निदवनायानं ॥ खयनमिया ॥ ० ॥
ॐ वज्रवृत्तायस्वाहा ॥ अपामार्गमि ॥ बृहस्वरूपअग्निदवनायानं ॥ ० ॥ ॐ वज्रक्रूवनायस्वाहा ॥ उलमि
वृहस्पतिस्वरूपअग्निदवनायानं ॥ ॥ ॐ वज्रयक्षायस्वाहा ॥ उडम्बनमि ॥ शुक्रस्वरूपअग्निदवनाया
नं ॥ ० ॥ ॐ वज्रशनिश्चरायस्वाहा ॥ शनिकद्धमि ॥ शनिश्चरस्वरूपअग्निदवनायानं ॥ ० ॥ ॐ वज्र

बोधिवृक्षाय स्वाहा॥ बलैग कसि॥ वेथावन दवता स्वरूप ग्निदवता याके॥ ० ॥ॐ वज्र ललाय स्वाहा॥ विल्ला व
सि॥ ग्निकाल स्वरूप ग्नि दवता याके॥ ० ॥ॐ वज्र ब्रह्म वीजाय स्वाहा॥ ब्रह्म तनु॥ नल सीहव स्वरूप ग्नि
दवतायाके॥ ० ॥ॐ वज्र मन स्वाहा॥ मधुकाकसि॥ ग्निता ह स्वरूप ग्नि दवतायाक॥ ० ॥ॐ ग्नि(आकाय
स्वाहा॥ ग्नि(आकसि॥ समाघ लिह्वि स्वरूप ग्नि दवतायाक॥ ० ॥ॐ वज्र सर्व पापदहन वज्राय स्वाहा॥ वज्र
कसि॥ वज्रसत्व स्वरूप ग्नि दवतायाक॥ ० ॥ॐ वज्र सत्कोलाय स्वाहा॥ श्रीपाति॥ बोधिसत्व स्वरूप ग्नि
दवतायाक॥ ० ॥ॐ सर्वकर्मा प्रशमनाय स्वाहा॥ कदम्ब सि गोलानसि॥ बोधिसत्व प्रत्येक बुद्ध स्वरूप
ग्नि दवतायाके॥ ० ॥ॐ सप्रतिहतवज्राय स्वाहा॥ ब्रह्म दवताव दीगस्वरूप ग्नि दवतायाके॥ ० ॥ॐ
वज्रा पुष्प स्वाहा॥ इ श्री हृतु स्म॥ ग्निपुदय कादवाग्नि याके॥ ० ॥ सर्वपापदहन वज्र सर्वपाप दह दह स्वा
हा॥ हाम्ल॥ समस्त पापस्नावक्र दवग्नि दवतायाके॥ ० ॥ॐ वज्र पुष्प य स्वाहा॥ ग्निकन॥ पृथिकनद
वाग्नि याके॥ ० ॥ॐ वज्र व ग्निय स्वाहा॥ ग्नि क्षा॥ वग व ल विवद वाग्नि याके॥ ० ॥ॐ वज्र ध्रग्नि चाय स्वा
हा॥ क्षौ॥ समस्त मल भावनयाक दवाग्नि याके॥ ० ॥ॐ वज्र वीजाय स्वाहा॥ स्वानवा॥ वीजाधिपति ग्नि
नि दवतायाके॥ ० ॥ॐ महाबलाय स्वाहा॥ मास॥ बलाग्नि दवतायाके॥ ० ॥ॐ वज्र लाजाय स्वाहा
नाय॥ नाक्षाग्नि दवतायाके॥ ० ॥ सर्वार्थसिद्धय स्वाहा॥ ठकापका॥ सर्वार्थसिग्नि दवतायाके॥ ०

॥२३

ॐ सर्वसम्पद स्वाहा॥ दक्षिण जन॥ स्वर्गयादिव्याग्नि दवकायान॥ ० ॥ॐ वज्रधाकुमाय स्वाहा॥ प्रियँ गृ॥ प्रि
यमानाग्नि दवनायानँ॥ ० ॥ॐ ब्लो वज्रदर्शनकुलाय स्वाहा॥ कालकुलानी॥ सर्वाग्नियान॥ ॥ॐ गग
ग्म गम ग्गगल विलोकिन कआ आ आय कृमृकस पुष्टि कृत्रु हूं कु हु स्वाहा॥ ज्वाल॥ विद्याग्नियान॥ स्नप
श्रीत्रिनत्वनहानव्या॥ भवना हृहिहृकाल त्रिनत्वनहय॥ त्रिनत्वश्रा॥ ॐ ना हूं॥ थ्वमन्त्र स्वाहा न्त्रकया का
वहयहना॥ त्रिकायवज्र भूत्राग्नियानँ॥ ४कृ गि हयमन्त्र॥ ननाज्ञान्व खकेथ क्लिनवामिकश्वहे घृतपू
र्णपात्रीमादाय॥ दक्षिणस्व हस्ते मूर्त्वे कृवामादाय मस्मील्य प्रदक्षिणीकान यिता॥ न भाक्षय॥ ब्लोवज्र
नल मृपसद कासेन याकृ वापात्रीकनथ यस्वय॥ ३ हूं लागान वज्रागीकृ खे लायाद विद्रना॥ मध्य
लाग सर्वनमृकृ ४ कथंश्रा नयनकृवा॥ थक्काडजनसा भागकुलल॥ क्वनजनदविद्रकुल॥ दथ्रमक
नसा मृकुकुल॥ थ्वकनगषजनकृवा॥ खडालाहा जिनपात्रीकडाव जवलाजिन घृतथडाव॥ थमृक
मृत दवलाहाजिन नाग्निकृ स्वंवाग॥ स्वाकहिनकं कृवाक्रमावकैठ नवलस॥ मध्य लाग्म दक्षालोग
न्म खे भनयकृवा॥ न्म खे मृ वैकृवालागी याम खेपृनयागिना॥ मध्य लागधो मृखे लागावायालमि
वहल॥ न्म खे मृ वैकृवालागी याम खेपृनयागिना॥ कृवापात्रीकसावकान महालागीहमृव॥ कृवा
लकृलथा यसह डान महापान्नयागीपदनामृख॥ ॥ला मानमि सृदवत्रुपमहन॥ मग्नि मल्हु हदव

नाथवक्षन निधम्बमनत्र बन्धाक्षिणिविघमृजा॥ ॥प्रमत्त यादिपक्वादियाविथाविध्रम माहात्र्यिया हध्यकण्यवाह
नायय तज्मा नस्पपूर्णि छ्रग रंस्वाहा॥ अर्थमाकापूर्वव नहु पायाथ्यं॥ ॥मत्त्रयदि हसर्वद्र्व्य मेनदग्निमुख
दत्त्वा॥ज्ञावकृत ससमस्तपदार्थ अग्निमुखमत्र्याधी विचयहजा॥ ॥कताससमाहिता मन्त्री वर्ण्ण गन्धस्व
नाकुष्णाअस्नुलाशुर्न मध्य वकृष्ण निमि हुमू पलक्षु यद॥ ज्ञावकृ समञ्चयमध्यया विभ्रमन स हलसम्पाद्रि
इमिवद॥ मन्त्रेशलें कामनाभ्य यिक हरव॥ शुलाशु कहिङ माहिङ हल थय्यंवर्ण्णना गन्धना अग्निवर्ण
लक्षुमहहुरव॥ ॥चन्द्रकान्ति मनि प्रसदु रवा नक नको पमाश॥ पुष्पेना गानिश वा पिसर्व पापविनाश
के॥ अग्नियाभ्याजिवर्ण्ण चन्द्रकान्तिथि मव नापाथिम्व पाँथिम्व पानिकाथि म्वशनजाव समस्तपाप
नाम॥ ॥कृष्णस्नातलिम्बमूष्य वर्द्ध्यंत मिर्॥ निर्ह्माम निर्म्मलावर्ति नाना मुगा कृछिकम॥ लाय
खानथिम्व चन्द्रमाथिम्व वर्ण्ण यान्तू शमानिश्रम्द्र समझ यिवरव॥ वदाम थिम्व वर्ण्णया कृद्धिवकशयू
कु मस्पं निर्म्मलन काव ति नागी राष्ट्री वाद नदायिव॥ ॥वभूकर्ष्किंसुकाको कडवाकृसम सन्निर्ते ॥
हन्द्रगोपत वर्ण्णजा नामं कर्ण्याद्वि वधकृग॥ वधुनिखानथिम्व नाहावृथिम्व अथवानको यखान
थ्यं हिंगुलखानथ्यं॥ क्षाहु वर्ण्णया इन्द्रगोपनलथ्यं सुवर्ण्णथिम्व वर्ण्णया मत्तलान हलनायु
ग्रध्वय्य हल॥ समस्ताकथवव सहहस॥ ॥चम्पकास्यकाधील मालानि पमसन्निर्ते॥ कर्पूजा

॥२१॥

गनकाश्मीननाही चन्दनगान्धिक ४ ॥ चवस्थान उस्थालस्थान · उशील · गिलिस्थान · पलस्थान · अगरु कुंकु
म · कस्तु जो · श्रीखण्ड ॥ धूनियागन्धवलसास हलहंउ · सखहल ॥ ० ॥ बीधावैवेस्नु दैगमदीनछीखेकाहल
हसन ४ ॥ सूर्यागेही नमि धांघं वंकि सर्वेसखावेह ॥ वध · वेंगकि · श्रीख · का हलसहो द्दधैगमस्थानहन व
नसवद · अग्नियागन्धपनिष्काइलस्था पूजाकागमचैनयापनिष्काइलस्थासहलहे सखहल ॥ अग्नियाश्व
ाव्दइलला ॥ यहजागमचैनपूजनाथां ॥ यजलपायासहलइलला · सहलाहउ · सखहल ॥ श्रीवस · क
त्रशीखाहत्रिशूलकेलखोपमस ४ ॥ ध्वजवामलसर्वंड खलिकाश्वगजाकुलि ४ ॥ श्रीवत्सथिंस्व · कत्र · शीख
थिंस्व · त्रिशूल · कलशाथिंस्व · ध्वजावामलवड खलिका · शातकिसिथिस्व · अग्निपनिष्काजकानन्द
निमललासेहल ॥ ॥ नन्दादिदक्षिणावर्ड एकपिङ्गमहार्थद ४ ॥ वक्रयकेसिवाकाला · सर्वसम्पत्ति
कातिथि · नन्दाहङ्गागयानिका पूर्णं ॥ पाइसिथि · एकादसि · नन्दातिथि · अक्कासेयातिथि ॥ ॥ इन्वाम
सप्तमीशादसी · हडातिथि · नलसक्कवतिथि ॥ ॥ सिनावे · अष्टमि · त्रयादशि · ऊयतिथि अग्नितीत
यातिथि ॥ ॥ चाथाक · नवमि · चवदशि · विक्कतिथि · अमाघसिद्धियातिथि ॥ ॥ पञ्चमीदशमीपू
र्णमी · पूर्णतिथि · वनावनयातिथि ॥ नन्दादिदक्षिणावर्ड धायथजगङा ॥ नन्दादिदक्षिणावर्ड
एकपिङ्गमहार्थद ४ ॥ वक्रनकसिखाकाला · सर्वसम्पत्तिकातिथि ॥ मङ्गलसूडावक्काव ॥ महार्थद

यलतवलमचामवाव॥च्छामहिथ्यें कव॥समलसम्यक्सिद्दल॥ ॥निष्कम्याद्विसियामध्य चतुद्धिथालसपु
ष्टिद्य॥ त्रबीजुहुँ यथविघाद्वि पनीप्रगुहुन्क थ॥ स्तम्भिन्हालममर्सि कावया नदाद सें कावया यचाद सें कौ
वयास्पृष्टिक्लाभहृयुख॥ ॥हामाग्निजनविधिनाचनूर्कें प्रसाध्य॥ कौचाम्बखेडमधुल्लानिजपूक औलि
पञ्चाम्रृतप्राणिमयायसमिद्धिमक्री॥ हामादिपात्रनिहितं प्रतिपादनायी॥ हुं त्रौं जिं खें हूं॥ उँ दिव्या नेत्रा न
त्रीनयस्वाहा॥ ध्वजहिडसरु॥ ध्वज उल्काविपत्तिहमहिडस्कहलसय॥ ध्वहाम विधिन॥ चतूसाधन
याय॥ पञ्चामृतवाञालिधान्पकीवाञाथूय॥ लँ गवति मदनसा ञहागझाति मदनसा मिगलनवलीस
ञाथ्याव॥ पूं श्रयवे नाचन॥ औं श्रयचलमं छेव॥ जिं श्रयचक्रमृताह॥ खें श्रयक्रमाघसिद्धि॥ उँ श्रयजकौ
ल्य॥ उँ कायवज्र॥ आंवाकवज्र॥ हूं चित्तवज्र॥ थूलवृहृहानक्या मन्त्रसाधननसिद्धि सुखलहृयि
वव॥ उँ कालपवमाकुन मूर्ति प्रसादधा नयाग्मृतन पीतवेपमृक्ति सिद्धि वीजानापनसथी नेकानि ॥२८॥
थ्ययव॥ ॥ञगावज्राचाचमनार्द्धकेंकलालाक्षाह नह्लानाग्निविकाय॥ कालाकानाग्नौयहात्मनवि
कमलचन्द्रासनापत्निम ३९ लाधिपति॥ पीठन्लिघपनेविघ्नवीजपत्निनामनम ३९ लाधिपतिसमाधुस
यैविनाव्य॥ ह्मनसलक्ष्ववज्रा ह्मुआदिहिनाहृयप्रवघवध्यासन्नाघ॥ कौनजीनसवसमर्यत्वनसं
हैकीस्याहिघिन्ये॥ प्रौञ्जघपाघाचमनार्दिकें पूजाम्भुतियर्ष्कें हृलाहृहृयाह॥ ॥ज्ञावकूनस ग

गिदवनाव्यावमनादिवक्षाय॥ वतुप्रकानयानाविधियाडाव॥ थवकंदगृलिहलि॥ ञदवनाखडावस्थि
काला॥ सगहमण्डलखंडाव॥ हृदयमपमवन्द्रयामध्यम॥ मण्डलाधिपतिक्षाय॥ मूलसूर्यदेवमा पूर्वव
न॥ ध्यनादिखडाव॥ वजीमृताद्दिमृडाकडाव पूजाविधिनियायह्नना॥ हव्यकव्यपूनद्रव्य वत्रमन्त्रक्व पूर्व
के॥ मृतयाहधृतपुष्पादि॥ अर्घ्य हानाहृतिदद्न॥ हव्यहृनप्ववस्तु॥ कव्यकुन्दुरुलसना॥ उव्यपक्व
मृतादिवनूहोमसम्पूर्यागावनयाक्वेयामन्त्रनदय॥ घृताहुतिन्याद्दिनं हानाहृतिविय॥ हना॥ ॥
ॐ दुर्गाथमगनेक्षोर्षेदुकपापविनाशनी॥ श्लोककाशयमानस्य ४ वज्र ओषधिप्रदापय ७॥ थ्वगमथाम
नया ओषाफागलपानसमस्तपापविनाशनहृयिवस्व॥ थ्वगध्यवलपाव॥ ऊंमानया गें वज्र ओष
वियह्नना॥ ॥पूर्णाहुतिविविधवस्तुफलादिनाक॥ वैश्वानरनं सूर्यगेस्तूनसलोकपालान॥ सैनाय
सर्वविधिनावलिनापवाने ॥ ने अष्टिमण्डलगनाध्यमपूपसंम्पूरू॥ पूर्णाहुतियायसमक्तनानाव
स्तुहृतनप्प॥ विल्वफलमादिनं॥ ऊंविनस्त्राद्दिनं॥ नालिकलन्यादिनं पूजायाङाव॥ हूनगप्प॥ अग्नि
देवता वाधिसव लोकपाल सैनाखयाय॥ वलिउपचान॥ पूजाविधियायह्नना॥ मण्डलजाद्दिनं पूजा
यायह्नना॥ ॥पूर्ववस्तनक्ष पूर्णाहुतिखहृयमन्त्रमध्रिपक्वे सफकविशतिवासपृनपूर्णेपाश्री
अवंधावधुनीगनश्राक्षक्तवादानपत्निनसहदया ७॥ क्ववयाथ्वे ननध्याय थनपूर्णाहुतिखथवह

दयमक्रमलध॥ नयमक्रनडाधनथहृन॥ क्रमधनथहृन॥ नीयक्तधनथहृन॥ नाहृनिक्षियहृना॥ ॥श्री
कृष्णवमनकेलासीधूपस्तुनिकृर्या७॥ ० ॥ गगनसमाधिङ्गलक्ष्मी॥ प्राकृतधमयक्षीरवलीरवनेहाय॥ म्न
तनकी॥ पूजास्तुनि॥ याय॥ गगनधाय॥ मावकृधम॥ कुकानसहिनन समाधिफलधाय॥ मलसगापथा
वदय॥ कुवज्रवासमस्वाहा॥ थमक्रनजपन॥ गजमदाय॥ ॥कु आ वज्रयाम्बुलायस्वाहा॥ थमक्र
नैशापन॥ स्नानदाये॥ ॐ स पुष्पसकुलकलनीयपुष्टिकुरुस्वाहा॥ पमात्यलादिसंगन्धस॥ धर्म्मध
र्म्मधर्म्मनागदहसर्व्वविध्यानप्रमालिकं कुरुस्वाहा॥ चन्दनादिसगन्धस॥ ॥कु आवज्रधूपश्रीस्वाहा॥
धूप॥ ॐ वज्रावलोकश्रीस्वाहा॥ दीप॥ थनिवादिपनगापनदय॥ ॐ आः हहयमुककदानपगय
मानसयथाहिलक्षिगैपूनयपूनयपूनकृनिप्रानिकुरु स्वाहा॥ ॐ कानकायवज्रस्वरूपवेन
नललेलाटसैथाय॥ ॥आः कानवाकवज्रस्वरूपजमिकालकथूसथाय॥ ० ॥ कसवाड
कानचित्तवज्रस्वरूपजन्मालहृदयसथाय॥ स्वाकानवलसैलवनाभिसथाव॥ ० ॥ हाकान
समयवज्रस्वभावजमाघसिद्धिपाइकासथान॥ ० ॥ हधायसवाधनहरगावकूहमुककनिमि
देवना॥ यगमानयाभगडपयान॥ यहहागमर्च्चेनविधानकृनै॥ डानिसँपूज्यवाकाससकलपू
हृथहृल॥ ० ॥ प्राकृतधवमनककलाहलादिकेकय७॥ वाक्यपूजास्तुनिकानय७॥ प्राकृ

२५॥

ध्मक्षय॥ सर्वोर्गें स्तिरवनैहायवसिवह्नायाडावक्रवयाथे· भालदक्कहून नयाव· पूगाम्लुगि· घृतपूर्णं वि
याव· क्षमापनयायङ्गा॥ ० ॥ नमः स्वह्हीजस्कलिंगदेवकाम धेनु हानामृत नत्र कलशाध थेश्चाय
हृमान महिषि भ्याशीर्वाद दयाउ॥ ॥ नेनक्षयन्त्रोवक्तः नथदवहू दयवीजनै हलल्तपूदवना·म
धेनु हानामृत· कलश सहितनक मव· हानामृतकलशक्षय॥ गन्धसमृद्धयाकन· सुवर्ण·वादपू
समस्कदवहलनयाओषधयस्वरूप॥ हानकलशहूनै॥ कलशपनमदवनास्वरूपसेय॥ हृगा॥
यजमान स्नातिधकवियङ्गा॥ आशीर्वाद वियङ्गा॥ ॥ नमानुनाथिकधावहानथविह्वायक्षमा
पय० ॥ वाक्कवचनवप· वपनक्षय· नायिनयायमजिव· मधिकक्षायनदव· थवदकेहानिमाव
कयाक्षमायाडप्रश्नाम्हयमानथके क्षमापनपनपह्गा॥ ॥ यत्कृतेडुष्कृतेंकिञ्चि तूमयामृता
वियापूनक्ष॥ कृत्वीनुलयानाथयदिआनासिद्दहिनी॥ यत्कृते गमनथुडुष्कृतेंकिञ्चि० केडुह
लसनामृठनह्हानिश्चापिक नवमलाक॥ अथमङ्गयिव थर्थिगवहहानिमूर्ष नन्ननपापक
र्म्ययाडायाडनप्रश्नाम्हयमान· नाथस्वामि· कलपालसन· जिनक्षायायमान॥ ० ॥ नमावङ्गस
लक्षुयनकवानैपजिगयागनाकनैपथि·चावलिंदवा· स्वहस· उक्षाप्यकडन्द्राद्दिलोकपालस्या
वोस्कवलिदयाउ॥ थनगवडसत्वयाजनकवोनमान· वडसत्वयामन्त्रस· भाला ग्रहदयमके

छामाङ्क नतिष्ठि॥ थ्व आदिन पदमास बलि बिय। वपदडाव लोकपालव बलि बिय॥ वाङ्क बलि बियगु हृला
॥ ॥ आलीढपदन प्राग्मुखं स्थित्वा वामवज्र प्रदक्ष दक्षिण वज्र कदि प्रदर्श सीधार्घ्य दक्षिण नङ्गी
हूँ कूँ आवाहय॥ आलीढ जवल गिन नप्पडाव खडगुनियन पूडाव धन पासी वपदडाव चाडा
व प्राग्मुखमय पूर्वदिगस्वयाव खवलाहातिन वालान लिनकाव जवलाहातिन बोखलस दिचका
व वज्र सहितन॥ वज्राङ्कुश स्वलाव आवाहय॥ पूर्वदिगस देवतान विघ्नान्तक भावना आवाहनम्
द्राक्षय॥ ॥ ततसम पदस्थित्वा नर्घ्य कूर्त नहिताक्ष मयमुद्रा॥ प्राङ्कुश पंपाघात मन नक्षकुं वा पूजा
दिक्षिस्थल मूल स्तोत्र दिक्षिण कला॥ ॐ नमाव ड्स्व बदिक्षिदिवज्रपा [illegible] नक्कन स्वाहा॥ कूपुन नवलि
दया॥ थ्व वलस मपा गुनिन धन पास कप्पडाव शीर्ष मुडाक डाव पाद्यादि अर्घ्यं च मनं प्राकम
याडाव॥ पूष्यादि पूजायाय॥ लास्यास्तुति॥ कुं कान पन माक नमूर्ति नमस्कान॥ दिशि दिशि भ
यस्र नक दिशायानो स॥ वज्रपाणि वाधिसत्व समनं दिशा विदिगे नक्षोया कङ्गा॥ स्वाहा स्व मुक्ति ति ४०
ष्ठय स्व॥ थ्वन मुद्रान वलि वियगु हृला॥ ॥ ततः प्रत्यालीढ पदन स्थित्वा॥ आवाहन मुद्रायागङ्गन
प्रसार्य विसर्जय दिशि संक्रम्य॥ ततश्च खवतुहि कप्पडाव जवतुनियल पूडाव आवाहन मुद्रा
वालाङ्ग वन घसपूडाव विसर्जन मगुला॥ ॥ वर्ग नव्य पाक र्षस समय विसर्जन प्र — आक्रम

मालीढ समं प्रक्षालं — पदानि॥ प्राकृश्यादि पूजाश्च पूर्ववत्॥ मन्त्र मुद्रा नाकु वितो यथा॥ दक्षिणतर्जनी कृपुला
काग्र धृकृ स्थयित्वा मध्यमतर्जन्यौ कृ नीयत — आनयेद् गृह्य स्व कन मध्य स्थापयेत्॥ इत्यावाहनं॥ अस्या मुद्राया
मुष्टिस्थ तर्जनी पार्श्व मिलन सम यथा॥ ॐ ए ह्ये हि कपिल कुल कुल ठाहिंश्रि श्रि मालिनि रूपाक्ष स्वाहा॥ अस्या मुद्रा
यातर्जन्यौ स्थन स्वोत्थे कनी यास्व विसर्जय दिम्यन्तेश॥ ० ॥अथ गुलिवर्द्धमानुवचस. अथ समावाहन
वलसमनुलया — याडस्वपुलपावहयार्थं श्राव मनुल वाडं वाड स्वपुल पूर्हाविक्ष्य वक्रविसर्जअयु
क्तो॥ ॥अथग — दनस्वनुपदना॥ अथ वलतयथाक्रमथ प्रक्षालीढ अयस्व डा तुगक्षकपडाव डडातु
मयलश्व डाव प्राकृश्यादि वहश्र प्रकान पूर्वं पाद्याव मनादि याडाव पूजा कृनि पूर्ववत्॥ अव याथ मन्त्र मुद्रा
कृष्ण वितो यथा॥ तुल्य ठतुन नाव कंग तुल्ला हानि नंवाला ह्यालाथि यकं कथुला स्पैं गुलि नाचा नानप स्वाव
कंक्ष लयमुद्राथं कयावथग आवाहनमुद्रा॥ ॐ ए ह्येहि ॐ कानप नमाकृन मूर्द्धि ह्मिन दवना कपिलठ
लठलहहंशि विमा अयवलास्व तुउमि जाह स्वमाननञा वह हंशि विश्व यस्य स्वानविषद स नपाथं
स्त्रि कमलदण्डालपु स्वस्वापावन कृयार्थं पामयू नजावथं मिवालिविकाल वानकास्य क्षाव.क
लिखयवगनक्षा वेवि नृ कृथायहयेकन स्यनापृथविं स्वर्ष्मिद वनानेरगंफिहनथयाक इनो॥ अथप
मुद्रानंकृग्निदवनाविसर्जनं॥ इवल्ला हानि नंवालादथूला कृतकुयावरवपुह्य डाव मुद्रानं वाडाव॥ ॥ कि
पृवितस्वाहा हवितना हवउव॥ मुनामिकाणांकुवी कृत्वा तोयजंनिमूलोपकनव — अपुन ननामिकृ पृथक्
॥ वाम मुष्टि कृतिमुद तो सोष्य तर्जनी कृत्वा दक्षिणमुष्टौ

अथात्र वामतर्जन्याकुञ्चनमुद्रिकासमय॥ ध्वखवलाहकिनकालकावालामृगाहृद्वसय॥ ॐ हर्वेह्न नयं
केनकुन्नितिथयनंकुपाद्याकत्वं॥ स्वाहा सृथिनयाडुंख॥ ॥ अस्याएववामतर्जनिंप्रभा न्हअधिसर्ज नमि
नमृष्य स्य॥ खडालाहाकिनबानानतनिनकँनन्खभ्रमृषिजवनाहाजियक्तास्यं विसर्जन मुद्राहस्ता॥ ॥
नाकुसविसर्जनहस्ता॥ दक्षिनमृष्टितर्जन्यगुंष्ठावकताआघ॥ वाममृष्टिहृदिकुवातर्जन्यङ्क्षौनवाहयह
थ७॥ सिवाकुनहिकालमय॥ ॐ ततनपृट मृपृटप्रिशिविनाविनृपाकुसाहा॥ ॐ कानपनमाकुनमृष्टिव
नृघदवताखनूपतनतत्र धयनागपाशेनयित्रुयिठ वाक्रवाक्रविद्यथवकंनाग दशनपंछाप्येळ
नागास्यं वभवानावानानोडावदिगसंढहनेगयावग्धडा पृक्षानथविंस्ववनूभनागनाजानंनक्षा
याकत्वं॥ वनृघविसर्जनहस्ता॥ ॥ वाममृष्टिवृत्रिगमध्यमातृतीयपर्वतर्जनिकुञ्चलाकानथधान
थ७॥ खवनाहाकिनेवानामालाथियकंदथूलानृयलीना— नानपस्वावकंखवइइपालवानवननावकं
क्षहयमृगाद्ध्यंगस्यंखडावाधृति॥ ० ॥ दक्षिणमृष्टिकृटिप्रथं२णसंक्षाप्याकुञ्चलाहृष्टनायाहथ७॥ सा
त्रवदथअगृहप्रवआ नमय॥ गवनाहाकिनकुनक्तियाव गवचावलतदिनृकंमालानेपवि— पि——सकं
नात्रवदक्षिणंगृहप्रवआत्मनमयथापहस्ता॥ ॐ सखवाखवखसाहा॥ ॐ कानमृष्टिंवायुदवगा— ॐ
हूमसखासनृपहस्ते॥ सखोधायलीकंसमतपदार्थकमनमपूयाकुनेमह मालाशस्वपायधनीडापाय

धनेवापू॥ थथिंग्वथधिग्वषापूदवतानंप्राणनक्रायातं॥ तत्रैवांतरप्रश्या नथाद्विसर्जनेवायाश्च॥ पूर्नक्रिया
नाहातिकृत्यपूजावविसर्जनेइना॥ ७॥ अथकुनवडवन्धकनिष्ठादयंत्वचीकृत्य॥ ततःपूष्ठातान्नामि
कायुगलंपृथक्नेसंत्वाध्यैमध्यमासत्वचीकृत्वावंशाकान्नक्षानयत्तावाहनं॥ भूत्वा एवमेत्पेसामनयंप्रवंभ्यस
मयश्च॥ इ याँ इ नाप्यतपूनकं वालानगृत्विं ष्ठ दथिदनेचानपथ्याडावं श्रीनाउथ्यं गयावडवन्धयाय॥ रव
नतिस्वकपवचकानाम॥ अथमूर्द्धानंकूवनदवता आवाहनइना॥ ॐ कूवनायस्वाहा॥ ॐ काम्र मूर्द्धिं कूवन
दवताकूवनेक्षयतमस्तयाद ध्यंगृहंस्नानक्लेनानावचाँड॥ अथ मातडज्ममरश्च॥ अथथिंगवकूवनदवता
नहम्याञ्जलिविव त्वंथग मूर्द्धानंकूवनदवकूजावथमूर्द्धालिकासंगानगत्तुनंकूवनदवताविसर्जनइ
ना॥ कनष्ठानामिकात्यांगलवडवन्धंकृत्वाञ्जं गुष्ठपूगलमाश्रितं मध्येमूत्याप्रथतर्जनीप्रसान्नहाद्विसर्ज
नमिनिष्ठ अनस्य॥ अथ ओचानगुलिकपतात्वकं तलयनकं॥ श्री लानंगुडीतलयनकंकपताचक्रं अथप्र
त्रेमवूहादिथिदानेघसवावकं इ नानदाप्यतपूनकं ष्ठ आनावाहयत् ॥ ॐ ष्ठ आनायस्वाहा॥ ॐ काम्र
र्लिंष्ठआनदवतासमक्लेदवतोयांनागा॥ शिवाकपदश्च प्रतिक्रियाकृतं॥ अथसथगंमुद्रातानगलडाव
ष्ठआनदवताविसर्जन॥ ॐ यइहिसंपूटाञ्जलि कृत्वा तर्जनीदयमाकृत्याबाहयेत् ॥ ततःएवग
र्जनीदयंपूर्ववसंस्कोपथे ७ समया॥ थवनेइह्निनयावेवाचानगृ॥

धनकुपीमइ॥

॥ स्वक्षदेवतांविसर्जनक्रवहतुमोराव

हुता ॥ पृथिव्यादि विसर्जन ॥ ० ॥ पुनर्मण्डलन्ह प्रवेश्य मण्डलांशु पृथ्व्यादि विशुद्धं पुष्प त्रिप्रदक्षिणिकृ
त्वा मूलकवस्त्रान न्ह्याम्हानि यथास्थाने स्थापय ७ ॥ उबं यावद समाप्त पर्यन्तं प्रतिदिने कुर्यात् ॥ हनं मण्डलके
इहा याव नजु मण्डल पूजा याय ॥ पृथ्व्यादि नामा वाक जडोय. वस्त्रान नमकुसनन याय याव याव नमधु गोग
क्रियं पूजा याय यज्ञ ता ॥ ० ॥ इदानीं लक्षाहुती हव्य प्रमाण मभिधीयते ॥ तिलानि अक्षता न्ह न शतप्रस्था
नि १०८ ॥ घृतानि पञ्चविंशति घटिकानि २५ ॥ धान्य यव गोधूम प्रत्येकं द्वादश प्रस्थानि ॥ १२ ॥ सर्व
धुन्हधूलानि नव प्रस्थानि ॥ ९ ॥ कालफला लाजा माष दश प्रस्थानि ॥ १० ॥ अखाव पञ्चविंशति बिल्वफ
लानि २५ ॥ गोवहद्यानि यथासंभव ॥ ० ॥ सूर्यदिने समिध अर्क द्वादश १२ ॥ वटा पञ्चविंशति २५ ॥
सोमदिने पलास विंशति २० ॥ आम्रा सप्तदश १७ ॥ भौमदिने अशेइव नाडन विंशति १२ ॥ कदम्ब अष्टा
दश १८ ॥ सोमदिने खदिर जाउ कविंशति २१ ॥ आमला षोडश ॥ १६ ॥ बुधदिने अपामार्ग द्वाविंशति ॥ २२ ॥ दृ
पक्षा पञ्चदश ॥ १५ ॥ बृहस्पतिदिने अश्वत्थ चतुर्विंशति २४ ॥ मधूका त्रयोदश ॥ १३ ॥ शनैश्चरदिने
समीकल्प चतुर्दश ॥ १४ ॥ अश्वकाद्याविंशति २३ ॥ गोमय समिध यथासंभव ॥ इदानीं धा
न्याव षफलस लक्षाहुति यज्ञ याय सह व्यड व्यवस्थाय ॥ हाम्रसक्ति धी आहुति १०८ धलनी
यडामूल २५ ॥ हम छाग्रा हुडयन ॥ १५ ॥ स्वानवाहुति १२ ॥ मो० आहुति १२ ॥ अक्षत हुति २ ॥ धुनिका
लस हुति १० गाय हुति १० मास हुति १० थ्याल २२ ॥ धगमदनमागवद २० म व नाझक यथासंभव हुता

ज्यादि प्रवाव वृक्षस्मर्कसिंकाय॥ ९१२ उनसि ९ २३॥ श्यामवानपचाननिं ९ २० मुमसि ९ १७॥ छ्रवानदद्म
वनिस्ति ९ (भूनि कोलेसि ९ १०॥ नीव ९ १०॥ मोम ९ १० व्यां ल १०) ९ दम्मसि ९ १८॥ श्री भ्रमनवाच वेयनमि
१५ आलमलि ९ १७॥ धूधवान श्यामार्गसिं ९ २२॥ पादिवान १५॥ हस्तदिवान वलगनसि ९ २४॥ मधू
काकवाति १२॥ आत्रिध्व नवाव समी कृष्णसिं ९ १४॥ नेत्रव यसिं ९ २३॥ ५ गं कुन (ॐ) सनयथ अहं नव॥ ०॥
छूवानि प्रति स्थाक दुकामाय जमाने ९ छ ह हृनि ज्ञा वा वों नां न्हा वायें या ना वार्य स स्व ह स्थ हि लाम ध्दलम
तिभाय॥ गन्धं श्रुकगान्धूलादि कं वस्त्र युगं प्रश्रुकं दत्वा॥ जाचय ७॥ स्व ध्व व याभि ह नाथ वं मआ कमह
धिस्ता॥ सर्वस वहिगार्थ्याय सं सावाइ छनायवा॥ वृद्ध तं प्रस्ताम्नाय पूष्या कं पुजनावच धिमनादिप्रति स्थाय
महास धुलव दुलं॥ ह्लामक्कियाति पूष्याहि १ कनेहं धंकनि स्थापि॥ ५ गं पुजानव ॥ प्रति स्थाया नापमान
यावान काथ्यीसं पूछ्यय ाइ दविहदि आ स्थयावञ्चो वार्यनासावार्य अयउपाश्च वा गु न्नुया ॐ वडावगु
वूसछ्लयाढावेग्वा दनसक्रान्ने याडाव, स्वयग्वालन्नादिनं वियाववकश्चादीनं उदयेके॥ लव क्रव ह्ल
स॥ यच्छ याचगं [illegible] ये॥ हगधूनाथ यकायेसिधाकेर्न कुनचाने कुनघोनयाइ पदकाने स्ट्रेव्र वेलनेस
मक्कलवयाननसं सानमृक्किया ययाहने, वृद्ध कूलप्रमिहि, गर्भ ग्रायया हने कुलपाल याव्यादीनं पूजाया
ययाहने॥ विहनादिनं प्रतिमाक्रादीनं सकोर्हि सूथि नपाय याहनु॥ उतमध्दुलनियो हना प्रक्षु सियध
वङ्कनायाग्रव॥ कुलपालयामूर्छिवलयाकेने उनका य व ह ९ म पूछ्ल वायउकाहाव, श्रीमिधाके ह्ना

२५

॥ ० ॥ नमा ध्यानपूजां कुर्वन्नावार्यां — नाभिपतियन्त्रलकं माइलयानाप्र पूर्वं गय ० ॥ ध्यानपूजा माहा
मध्ये वालिनीजन्ता ॥ सकानवीज त्रिदलोर्ध्व गर्भ स्वर्ग स्व कुन्दरे नव ॥ श्रीमूलनागभय स्वं गजनस्थ ऊदनश्री
ख ९६ कृ ॥ बलिआलिङक ॥ षट्कपंचपदा सर्वसिद्धि सर्ववाम्र पूजय ० ॥ विन्दु स्वरूप भैकापालि स्वगण क्षा
त्रूपालितं ॥ ऽग्रवज्रायकें ९ वीध्यानपूर्ष्यं नमास्तुम ॥ ॐ क्रीं श्रीं क्रूं हः महाम त्रुवि घ्रनामायकृ हूंफट् ॥ स्वाहा
क्षेत्रपालमन्त्रः ॥ ॐ गणपतये नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा ॥ ॐ मं महाकालाय नमः स्वाहा ॥ ॐ सैथा
गीति छिलाकेहूं वनन्रे श्री घ्रहूं फट् ॥ स्वाहा ॥ आवाहनमन्त्रः ॥ ॐ हूं फट् सिद्धिचण्डे नमः स्वाहा ॥ पूजाम
न्त्र ॥ ॐ उग्रचण्डे नमः स्वाहा ॥ पूजा स्तुति ॥ क्रीं नीलग्रीव महमदाम घोर इक्षा हयाहन उद्धि वें ॥ विरूपा
क्ष क्षेत्रपाल हूं हूं फट् हूं क्षहिम महाबलि पमि गृह्न २ हि २ पच २ खव २ खाहि २ हुं हूं २ विघ्र हं ने व
रूपन बलि प्रति गृह्न २ क्रीं फट् स्वाहा ॥ बलिमन्त्रः ॥ — त्रैशीर्ष वं सकास स्व घ्रफट् के । विन्दुकं ॥ कामरूपा
उग्रचण्डे नमोस्तु ॥ ॥ पूर्वब्रह्माणी पीताम्बर कान्वीगाकृता ॥ हलीघ्र पालो प्रयागकृत ॥ अरिशोगा
नव ४ कृ कृ वर्ण नागकं आनरकृ ॥ मूलाप घ्रनाग पीत वर्ण बलि त्रुधिन चक्र पत्र पताकः ॥ पाद्य
वमी नवविवाश्र पूजय ० ॥ सूधापात्र पूर्ण गन्धमालाक विन्दुकं ॥ ब्रह्माद्य वाहय द्वीध्यानपूर्ष्यं नमोस्तु
ते ॥ क्रीं श्रीं हिंः ब्रयागस्थ विघ्रनाशाय कृंफट् स्वाहा ॥ मन्त्र ॥ ॐ कूं ब्रह्मायनीय ब्रह्मलोक स्थ वक्तर २ सिद्धि प्र
कूं फट् ॥ ऽगाव स्वाबाहनमन्त्रः ॥ ॐ हूं फट् ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा ॥ पूजामन्त्रः ॥ ॐ कूं वक्त्र वरदे नमः

ऊग्रपाल

स्वाहा॥ ऐ नवस॥ ॐ ह्रीं नीलग्रीव नमः कामिश्रादि॥ ब्रह्माणी पूर्वपीठ ताम्रकानवीज संरवा॥ स्वापृथ्विनृपात्र
वनमस्के हंसवाहिनी॥ पूजा ब्रह्माणी पूजा॥ ०॥ उकृष्ण सोङ्गा लिमिताकेकानवीज दिगपाल कूत्मे॥ पीतवर्ण
कालाग्नि तिके त्रवस्त नेवठ॥ नक्रवर्णो॥ पुन्नागेवृक्ष॥ श्री पालनागठ पीतवर्ण॥ वलिमांसतिथि दुनाक्ष
दशमीसामर्दीनपूज्य०॥ मधुपूर्ण कपालक तस्पनेम्लदिक्षिणं॥ वृडाणी बाहय ईवी ध्यानपुष्पं नमा
स्कुग॥ ॐ ह्रीं श्रीं कूं कालाग्नी नी विघ्ननाश यकु स्वाहा॥ क्षेत्रपाल मन्त्रै॥ ॐ हठ वृड्राणी चुड लोकस्व
मन्त्र श्रीं कूं स्वाहा॥ ॐ ह्रूं सोङ्गाय नमः स्वाहा॥ ॐ वृड्रव नमः साहा॥ क्रीं नीलग्रीवादि
वलिमन्त्र॥ वृडाणी उकृष्ण नवर्णे ताम्रकानवीज संरवा॥ स्वापृथ्वि विनृपात्रं वनमस्के वृषवाह
नी॥ पूजा वृडाणी पूजा॥ कृष्णयकामाणीनक्रवर्ण यकानवीज त्रिदिगपाल नक्रवर्ण॥ न्य द
टहासक्षेत्र॥ क्षा धसे नेव॥ हरितवर्ण वाह॥ कनकवृक्ष॥ पद्मनागे नवर्ण वलिन्द्र गुप्ति॥ क्ष
मन्त्रा॥ पक्वान्नमद्यचूदाया॥ तिथि द्वादश॥ एकादशी॥ मंगलवारप्रहर्य०॥ विन्नकेशाकि हम वेधन्यपेक्षि
रुपमालिका॥ कोमार्यां रा नयद्वी ध्यानेपुष्पं नमस्कुग॥ ॐ ह्रीं श्रीं कूं हठ कहहास विघ्ननाशाय कूं हृ॥ उचकोमा ४४
नि उमा लोक स्वनन कृ स्वाहा॥ ॐ ह्रूं कामाणीय नमः स्वाहा॥ ॐ नलकण्ठसंनवाय नमः स्वाहा॥ क्रीं
नीलग्रीलग्रीवादि॥ वलिमन्त्र॥ कामाक्षि वक्रिनेकारावकानवीज संरवा॥ स्वापृथ्वि विनृपात्रं वनमस्के मयूरवाह
नी॥ पूजा कामाक्षि पूजा॥ नैऋत्ये कुवी श्याम वर्ण वाह॥ टकानेवीज॥ नोकृत दिगपाल रायकिक्षेत्र॥ डन

मकरासनव॥कक्षवर्णे॥पिनाकवज्र॥४॥अनंतनागः॥नीलवर्णः॥४॥वलिनिरुत्या प्रतिमाल॥नाथकन॥तिथिच
वदशी द्वादशी॥वृषवाहनपूजयत्॥गजावधनाया चक्रपिनसहविन्दुकं॥वेक्रवावाहयद्देवी ध्यानपुष्पन्नमस्क
रं॥क्रीं श्रीं क्रूं ह४ जयक्रिविघ्ननाशाय क्रूं फट् स्वाहा॥ॐ टंवेक्रवीविक्रलाक्षगवरनरक्रूं फट् स्वाहा॥ॐ ह्रीं
हवेक्रवी नमः स्वाहा॥ॐ वीनच १६ नमः स्वाहा॥क्रीं नीलजी आदि॥वलिमन्त्र॥ वेक्रवी ध्यानमन्त्र शाने
कानवीजसंरवा॥स्वापृथ्वी विन्दुपात्रचनमस्कगत्रुणसवी॥ वंइति वक्रवी पूजा॥ ० ॥दक्षिणवानाहिनकव
र्णे गकानवीजदिगपालगध॥४॥एकमवकत्र४॥कपालवेनव॥तिथिवे॥अमावसिमा॥कुलिकनाग४॥कृ
ष्णवर्ण॥४॥वलिपक्षपताका॥तिथिपक्षमित्रयादशी वृहस्पतिवानपूजयत्॥ ० ॥पाशक्रूधनायारहनक
पात्रकविन्दुकं॥ क्रींलास्यावाहयद्देवी ध्यानपुष्पन्नमास्कुरं॥क्रीं श्रीं क्रूं ह४ एकाम्बकत्रविघ्ननाशायक्रूं फ
ट् स्वाहा॥ॐ मवानाहिह मलाक्षवनगरश्रीं प्रं क्रूं फट्॥स्वाहा॥ॐ ह्रौं फट् वानाही नमः स्वाहा॥ॐ क्रूं विगयव
१६ नमः स्वाहा॥ क्रीं श्रीं नीलजी आदि॥वलिमन्त्र॥४॥ वानाहियाम्यनकालकानवीजसंरवा॥स्वापृथ्वीवि
न्दुपात्रचनमस्कत्रगवाहिनी॥ इति वानाहि पूजा॥ ० ॥पश्चिमकष्ठायनी॥कुक्कुमवर्ण॥४॥पकानवीजत्र
तूलकत्रदिगपालवरुण-ईश्वरतेनवपीनवर्ण॥४॥वलिमत्स्य॥४॥तुरीय--- कृष्णस्य वज्र॥४॥कर्कोटक
नाग४ श्यामवर्ण॥४॥तिथितिथिचतुर्दशी॥ शुक्रवारपूजयत्॥ ० ॥आनपत्राकत्रदंचविन्दुपात्रासहं----
---यावाहयद्देवी ध्यानपुष्पन्नमास्कुरं॥ ॐ क्रीं श्रीं क्रूं ह४ वानानध्याविघ्ननाशायक्रूं फट्॥ॐ पश्चिमायनी

थऽन्द्रलाकं श्रवनवशिप्रंकूं फुट्स्वाहा॥ ॐ ष्ठैं फट्‌ष्ठेंद्राय(क्षे)नमःस्वाहा॥ ॐ प्रानवार्ळ्र्नमःस्वाहा॥ क्रीं नीलश्री
प्ताधि॥ बलिमन्त्रः॥ थऽश्राथी---पृथ्वीतालपक्वानवीगसंरवा॥ स्वापृथ्वाविन्दुपाञ्चनमस्तु गगवाहिनी॥ थऽ
निष्ठ्रायथिपूजाविधि॥ ० ॥ वामृथ्याया वामृथ्यनकूवर्णलेवा॥ वलिसिन्दूनाक्कश्रनयक्कानवीग॥ देवी
थऽकूत्रहं ---वनकूवर्ळे---वामृदिश----मा---इद्रनवमृकू॥ वामृदिनाग॥ ज्ञोनवार्ळ्रतिथिम
कम्पि पूर्ण्लीकातिथ्यनवासनपूजयऽ॥ विन्दुकं---------निवठोनं॥ वामृथ्यावाहयध्वीध्यान
पृथ्यानमस्तुणं॥ ॐ क्लीं श्रीं कूं हूं देवीकाटविघ्ननाशयकूं फुट्स्वाहा॥ ---वामृथ्यऽमालीकं श्रवनवशिप्रंकूं
फुट्॥ ॐ ष्ठैं फट्‌वामृथ्यायैनमःस्वाहा॥ कूं वाव--------क्रीं नीलश्रीमूर्तंकाशीधानूइक्वानयावह॥ ऋ
कु भावि वृपाक्कं कवपालवह-----उ ष्ठैं हिमहावलि--------पचुरत्वेत्वोहि स्वाहि थि प्रहेनवत्रुप
नवलिपमिगृकरक्री फुट्स्वाहा॥ वलि॥ वामृथ्यानकू वामृथ्यायकानवीगसंरवा॥-----------प्रेग
वाहिनी॥ इति वामृथ्यपूजा॥ ० ॥ थऽध्यानमहालक्ष्मी· क्षुधितवर्ळ्रोकाशावर्ळ्रकाम-----
गलवर्ळ्र॥ ववीकूत्र॥ ---नवकूं॥ थऽध्यानयादिगपालमहेन्द्रनकूकनागनकू· तिथिक्रमि· श्रुमा ४१
वासिसर्वदापूजयेत्॥ वलि॥

श्रीभूर्नविलोषंतछ॥ संपताधं महात्मा हं कृत्वा सर्गथै ३॥ दाना नवाङ्कश्चाग(थशल मूर्ध्वं दानद्र प्रया॥ छद्
कर्म्मने॥ सच्छलरुच्छ्रव॥ पाप्रश्रेतिग्रह या मृत्यु कर्म्मनं सच्छलद्रक्त्रिग्रक्षुवखे॥ नथा गैन मधि लखतप लाछमनो
हनो। ऽन्धाहामानयोगावस्थापनायाऽनया समस्कं विसर्जन॥ यायहूना॥ ॥दमर्ङ्कि संग्रह माधिगास्तुगा
दछाध्यानविछ्रद्ध(ल्लेशिगाने॥ प्रशल्लविधामसलमन्दमाननी प्रयाग संपानमिनाप्रत्तमिका॥ ०॥ ध्वज्जिला

प्रक्रियापविपाविनसाधनपंक्तिगाहान साधनपापाक्रन विधानाकाभिपविन्म नतुनलोकप ठसइ विसे दवगुन्म
इयं स्वर्गवासइ भीव मन्दमललाव विनमइ त्रयिव ॥ दभ वानमिनावना नया वा दश्रा तुमी थ्य नप्राफ इवं ॥
॥ ० ॥ इति वादआ मिक्रियाकार्या विधिस्तगा ॥ समाप्ता ॥ हिनत्छ माला नामदश्रा क्रिया विधिसमाप्त
मि ॥ ❀ ॥ श्रेयोस्तु सम्वत् १०१० लाडवक्त क्र वाद शिश्र) क्रवान क्षुद्र थ्व वादश्रा क्रिया पुलीयु किलं
नयाक्षा रव गनं गनं मइ गहं गहं पीमइ गहीगहीती मइ गुजी ६६न वाम गु कूचाक्ष वाद वधुं गु गु से कुव
याहिक छ क्ष सीकास वं याना ॥ मधुनवर्ष महा विहानम वान क वक्र चार्य पछिनठ माहस्य नामगु पाई
वायछिधयकाक्रल ॥ थ्व सकूथ्व हविहानवान क देवआ निवज्र चार्ययानथा यादिया ॥ ० ॥ थ्व सकू तिथि
छ यु थाकव मइ गु हाति पछि नठ पिंस नयाशुद्ध याना विज्याक ॥ सर्वजगतां सुतं हयातु ॥ ० ॥ शुभम् ॥

४१